

चयापचय

23 सितंबर 2017

क्या, कसिलिए हम करते है, क्या प्रयोग करते है — यह पूछना बड़ी प्राथमिकता है। और यदइसे करते समय हम न्याय को केंद्र में रखें, तो हम बेहतर ढंग से आगे बढ़ सकते है।

« »- : -- , , , :- - ?,,? -,,? -,,?

- - « 2.2 » -- -- , -

क्या, कसिलिए हम करते है, क्या प्रयोग करते है — यह पूछना बड़ी प्राथमिकता है। और यदइसे करते समय हम न्याय को केंद्र में रखें, तो हम बेहतर ढंग से आगे बढ़ सकते है।

WWF - ; - , , - - : - : , , - , :- -

, , - - , , , - , - ,

- , - , - , ; - , - ,

- - , - - , : , , - : ,

गेज़ी पार्क हमारे जीवन को सरल बनाने वाली एक वस्तु बन गया। जब हम पर्यावरणीय संघर्ष की बात करते है, लोग अब बहुत आसानी से समझ जाते है।

, - ? , , , NASA - , - - : ? , - ,

- - ; - - , - - - -

- , , - , - ? , , - , , - - - , : , ,

: - - , , , - - - - , -

क्या कळूगी, यह मैने कभी नहीं सोचा। मैने जयिा।

गेज़ी से पहले साझा-संसाधन समूह वभिन्नि आंदोलनों के बीच सेतु बनाते थे — सार्वजनिक विश्वविद्यालय, असुरक्षित शर्म, पारस्थितिकी, खाद्य, सार्वजनिक स्थान। चार-पाँच मंच आयोजित हुए। फरि गेज़ी आया और एक क्षण में सब-कुछ एक साथ आ गया। कति उसके बाद एक परमाणुकरण हुआ। हम कणति हो गए, बखिर गए। अवसाद, करियर, परिवार बसाना — सामूहिक ऊर्जा से व्यक्तगित पीछे हटना। कति इस बखिराव से कुछ नया फूटा: — प्रतरीधी उत्पादक और उपभोक्ता सहकारी। नाम ही कार्यक्रम है: प्रतरीध-केंद्रति खाद्य-राजनीती

का अभ्यास सरल है कति कठिन: प्रतसिप्ताह स्थानीय उत्पादको से ऑर्डर, प्रतसिप्ताह वतिरण, प्रतसिप्ताह शर्म। बीस-पच्चीस लोगों की समन्वय-टीम, ढाई-तीन सौ परिवारों का जाल। बेयोग्लु में एक स्थान — — एक साथ वतिरण-केंद्र, मलिने का स्थान, प्रदर्शनी-स्थान। दो वर्ष से अधिक से हर सप्ताह, बलपूर्वक कति नरितर।

हम हर सप्ताह ऑर्डर देते हैं, मुश्किल से। हर सप्ताह कोई जाता है, खरीदारी होती है, हर सप्ताह वतिरण होता है। मुश्किल से।

— , , - - , , , «- »

- « » : , , , - - , -

एक वृद्धिका भी प्रश्न है। बढ़ना नहीं चाहता — सचेत रूप से। अधिक बढ़ना गहराई खोना है। टिकाऊ दीर्घकालिक नकितताएँ बनाना, संबंध की मोटाई बनाए रखना — ये पैमाने के बढ़ने पर कमजोर होते जाते हैं। अनविर्य दक्षता अभ्यास को मार देती है। इसलिए वह छोटा रहता है, कति छोटेपन में एक सघनता है। समूह के साथ — कलाकारों के साथ — सहयोग होता है; हाथ-छपाई प्रचार-सामग्री बनती है। सब-कुछ हाथ से, आमने-सामने, धीमे।

के पीछे मूर्त संघर्ष है: उत्तरी वनों का प्रतरीध, येदकुले बोस्ताने — सदयों पुराने नगरीय बाग ध्वंस के खतरे में — पयिलेपाशा बोस्तानी, मीमार सनिन का सोलहवीं सदी का मस्जिद-बाग आठ सौ मलियन डॉलर की नगरीय पुनर्नर्माण परियोजना की छाया में। खाद्य-संप्रभुता, नगरीय साझा संसाधन, पर्यावरण-संघर्ष — सब एक-दूसरे में बुने हुए, पारस्थितिकी का अंग।

आर्थिक क्षेत्र, पर्यावरण, सामाजिकीकरण — सब एक-दूसरे में बुने हैं। पारस्थितिकी का अंग।

- - - , , , - , , « » - , - , - -

: , - , -

प्रकृति में मुझे सबसे अधिक प्रभावित करने वाली वस्तु उसकी आकस्मकता, अज्ञेयता और प्रत्यक्षता है।

- - , ; , «-» - -

- : ? , - - « » - : (,) , (,) ,

MIT - , , - - , «- » : - - - -

- « » « » : - ? - - , 1950 - ; « »

चयापचय अनविर्य रूप से एक खुला तंत्र है। उसकी आवक है, जावक है, अपशष्टि है। इसे बंद करना संभव नहीं, कति प्रवाह को धीमा करना, न्यायसंगत रूप से बाँटना, अपशष्टि को कम करना संभव है। यहाँ हम पुनः के अभ्यास पर लौटते हैं: एक धीमा सामाजिक चयापचय — खाद्य के माध्यम से, स्थानीय, नकित, संबंध-आधारित उपभोग-व्यवहार।

यह काम लिखने से नहीं होगा। इसलिए दृश्य पक्ष का सशक्तीकरण अतमिहत्वपूर्ण है।

, , , - « » : - ; ,

: 2011 - , , - , , - - : ; : « ? », « ? » - - ?

, ? - ,

यह वार्तालाप भी एक चयापचय है — ज्ञान, अनुभव, भाव का आदान-प्रदान। धीमा, हठीला, क्रॉस-दशा वाला। सामाजिक-पारस्थितिकीय चयापचय को सम्मिलित करता दृष्टिकोण की चयापचय-शय्या है — वह ढाँचा जिसमें हम बैठते हैं, वह वायु जो हम साँस लेते हैं, वह अनुभव जो हम पचाते हैं।